International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 848-849

जैनेंद्र के कथा साहित्य में मनोविश्लेषणवादी वृत्तियां

चरत सिंह

गांव-कोटली जिला सिरसा, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

जैनेन्द्र के ये समस्त तेईस नारी पात्रों का चित्रण उपन्यासों में चरित्र विकास की दृष्टि से किसी ने किसी रूप में उपलब्ध होता है। इसमें से सफल प्रेयसीयत्व की भूमिका में सर्वश्रेष्ठ चरित्र इला (जयवर्धन) का है। वह अंततः निर्विघ्न रूप से अपने प्रेयसीयत्व को पत्नीत्व में पाती है। इसके बाद सफल प्रेयसीयत्व नीलिमा दर (मुक्तिबोध) का है। जो अपने प्रेयसीयत्व से प्रेमी को जागरूक बनाती हैं। निश्च्छल प्रेयसीयत्व की कल्पना में तिन्नी (विवर्त) का चरित्र भी गणनीय है। अतृप्त पत्नीत्व और प्रेयसीयत्व की अधिकारिणी एकमात्र मृणाल (त्यागपत्र) कही जा सकती है। पत्नीत्व की आदर्श समपूर्णता प्राप्त नारियों में गरिमा (परख), कल्याणी (कल्याणी), राजेश्वरी (मुक्तिबोध) तथा रामेश्वरी (अनंतर) हैं। अंजलि (मुक्तिबोध) तथा चारू (अनंतर) दोनों नारी पात्र अपने पत्नीत्व को अपनी समग्र चेतना में अज्ञात संशय से संवारने में व्यस्त प्रतीत होते हैं। पत्नीत्व को विभिन्न परिणितियों के रूप में भोगने वाली नारी पात्रों में से एक अपराजिता या अपरा (अनंतर) है। जो विदेशी संस्कृति में कई विवाह भोग कर तलाक ले चुकी है। भयंकरतम परिणति की भागीदार नारी पात्र मंजुला या (अनामस्वामी) मंजू है, जो विधवा नारी के रूप में अपने पिता के घर में शेष जीवन बिता रही है। इनके अतिरिक्त असफल प्रेयसीयत्व पत्नीत्व की कोटि में कटटो (परख), भुवन मोहिनी (विवर्त), अनीता एवं चन्द्रो (व्यतीत) है। असफल पत्नीत्व-प्रेयसीयत्व की कोटि में आने वाले नारी पात्रों में सुनीता (सुनीता) और सुखदा (सुखदा) हैं। सामान्य नारी पात्रों की कोटि में सत्या प्रमुखतः एक भगिनी के और अंशतःसाली के रूप में चित्रित युवती है तथा तमारा अपनी सहेली के पति कुवंर के प्रति यौनाकर्षण में लीन सामान्य नारी के रूप में चित्रित है।

जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास 'परख' लम्बी कहानी न होकर उपन्यास कैसे बन गया इस सन्दर्भ में जैनेन्द्र की यह उक्ति विचारणीय है: ''इसी दौर में एक कहानी को लेकर बैठा कि अटक गया। देखा कि मन में काफी विकल्प उपज रहे हैं और ताना-बाना फैलता जा रहा है। इससे तो मैं डर गया। छापे में छः-सात पृश्ठों में चीज आ जाये तो ठीक है, पर यह बला तो उतनें में समाने वाली नहीं दीखती। इस उलझन में पड़कर तीन-चार सफे लिखे हुए उठाकर दूर हटा फेंके। पर कुछ और करने को न था और लिखने से मिली ताजगी तीन-चार दिनों में चुककर खत्म हो गई थी। फिर वही मुर्झाहट। सोचूं कि लिखूं तो वही पुरानी उधेड़-बुन के तार दिमाग में जाग जाएं। आखिर टालता कब तक? इस तरह उस कहानी को लिखे चला गया तो बन गई 'परख'।'' [१],

जैनेन्द्र की सृजन-प्रक्रिया को स्पश्ट करती हुई उपर्युक्त पंक्तियां 'परख' के कहानी से उपन्यास बन जाने की प्रक्रिया को अत्यन्त स्पश्ट रूप में प्रस्तुत करती हैं। सर्जक साहित्यकार की ऐसी उक्तियां षास्त्रीय षब्दावली में व्यक्त कथनों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। 'परख' लिखते समय लेखक कहानी ही लिखने बैठा था किन्तु मन में उठने वाले 'विकल्पों' ने उसका स्वरूप बदल दिया। स्पश्ट है कि उन विकल्पों के उतर खोजने में ही कहानी का ताना-बाना फैलता जाता है और उपन्यास में विस्तार का कारण बनता है। किन्तु यह विष्लेशण जैनेन्द्र के उपन्यास और कहानी के संदर्भ में ही सार्थक हो सकता है। किसी अन्य लेखक के सामने अन्य अनेक ऐसे कारण हो सकते हैं, जिनसे अमुक सामग्री का उपयोग वह कहानी के रूप में तथा दूसरी सामग्री का उपयोग उपन्यास के रूप में करना चाहे। जैनेन्द्र की सृजन-प्रक्रिया अन्य कथा-साहित्य लेखकों से पर्याप्त भिन्न हैं। वे मूलतः किसी विचार की अभिव्यक्ति के लिए लिखते हैं; अतः कहानी अथवा उपन्यास का स्परूप उसी विचार की विवृति के अनुरूप बन जाता है।[२]

इसी प्रकार यदि पुरूष पात्रों का सांख्यिक विश्लेषण किया जावे तो असफल प्रेमियों में हरिप्रसन्न (परख), जितेन (विवर्त), तथा चिदानंद (जयवर्धन) हैं। असफल पतियों में श्रीकांत (सुनीता), कान्त (सुखदा), नरेशचंद्र (विवर्त), पुरी (व्यतीत), श्रीनाथ (जयवर्धन) तथा नपुसंक कुमार साहब (अनामस्वामी) है। अब असफल प्रेमी एवं पति की श्रेणी में सत्यधन (परख), जयंत (व्यतीत) तथा सहाय (मुक्तिबोध) हैं, और असफल पति एवं प्रेमी की श्रेणी में जयंत (व्यतीत), आदित्य (अनंतर) तथा शंकर उपाध्याय (अनामस्वामी) है। इसके विपरीत सफल प्रेमियों की श्रेणी में लाल (सुखदा) और जयवर्धन (जयवर्धन) तथा सफल पतियों की श्रेणी में बिहारी (परख), कुमार (व्यतीत), कुवंर (मुक्तिबोध) एवं प्रसाद (अनंतर) हैं। सामान्य पुरूष पात्रों की सक्रिय कोटि में क्रमशः प्रमोद (त्यागपत्र), डॉ० असरानी, देवलालीकर एवं प्रीमियर (कल्याणी), हरीश दा (सुखदा), आचार्य एवं हस्टन (जयवर्धन), ठाकुर एवं बी०पी० (मुक्तिबोध), गुरू आनन्द माधव (अनंतर) तथा अनामस्वामी एवं सर एम. दयाल (अनामस्वामी) हैं। इनके अतिरिक्त विद्यमान पीढी-भेद की दृष्टि से चित्रित पात्रों में वीरेश्वर (मुक्तिबोध) तथा प्रकाश (अनंतर) है। जैनेन्द्र ने कतिपय आंशिक चरित्र के क्रांतिकारीयों का संकेत भी किया है गंगसिंह (सुनीता), पाल (कल्याणी) तथा इन्द्रमोहन (जयवर्धन)। इन्होंने किसी विशिष्ट भूमिका का निर्धारण नहीं किया है। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों में मांसल मानवों के स्थान पर जिन विचार मानवों का सृजन किया है, वे अपनी बौद्धिक कथान्वित में अत्यंत सफल चारित्रिक परिणतियों के अधिकारी बनते हैं। जैनेन्द्र की अत्यधिक बोझिल दार्शनिक विचारधारा, विशिष्ट गांधीवादी चिंतन व्याख्या के परिपार्श्व में वे उपन्यासकार की लेखनी से ही प्राणावंत व्यवहार पाते हैं इन पात्रों के सृजन के स्तर पर उपन्यासकारने उनके वैयक्तिक संसार, जीवन दर्शन, अहंवादी चेतना और कुण्ठित मानसिकता तथा स्वेच्छाचार को ही आधार बनाया है। नवीन मूल्यों के निर्धारण एवं वर्तमान मूल्यों के परिवर्तित स्वरूप या विघटन को रूपायित करने में जैनेन्द्र के विविध पात्रों की सृष्टि हिंदी उपन्यास साहित्य क महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

आज का समाज अधोमुख है। समाज के निवासी अपनी स्थिति से संतुश्ट नहीं हैं। नीतियों ने उन्हें अत्यधिक निर्धन बना दिया । फलस्वरूप उदर पूर्ति के लिए उन्हें अनेक अन्य बुराइयों की ओर अग्रसर होना पड़ता है। इस समय किसान, मजदूर तथा समाज के अन्य श्रमिक दुखी हैं, क्योंकि किसानों पर जमींदारों के माध्यम से कहर ढाया जा रहा है जबकि यंत्रीकरण के माध्यम से श्रमिकों की रोजी-रोटी पर प्रहार हो रहा है। समाज में अनेक ऐसी कुरीतियां घर कर गई, जिनके कारण लोगों का जीवन जर्जरित होता जा रहा है। अनमेल विवाह, बाल विवाह, छुआछूत, हिंदू-मुस्लिम अनैक्य, दहेज प्रथा, विदेष गमन रोक आदि अनेक ऐसी बातें समाज में प्रचलित है, जिससे भारतीय समाज में

उन्नति से बहुत दूर प्रतीत होता है। लोगों में ईर्श्या-द्वेश का भाव भी बढ़ रहा है। जिससे सामाजिक प्रगति पर कुठाराघात हो रहा है। भारतीय विदेषियों का पक्ष प्रबल कर अपनी स्वार्थ साधना कर रहे थे जिससे समाज का नैतिक पतन भी हो रहा है। कन्या-भ्रूण हत्या हो रही है।

भारतीय समाज के मेरूदंड में रूप में जिन कृशकों एवं श्रमिकों का उल्लेख किया जाता है उनकी हालत सबसे अधिक हेय है। अंग्रेजों ने जमींदारों को षक्तिषाली बनाकर उन्हें किसानों का षोशक बना दिया है। जमींदार किसानों पर अनेक अत्याचार करते है। उनकी उपज का अधिक से अधिक भाग लेकर उन्हें निर्धन बनाकर अपने हाथ में किए रहते है। समाज के कल्याण के लिए नियुक्ति अधिकारी तरह-तरह जुल्म ढाते थे और अपी स्वार्थ-सिद्धी करते है।

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। सामाजिक संस्था मे ंपरिवार का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। यह समाज की मौलिक सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है। समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही संभव है। अगर कहा जाए कि परिवार ही समाज को अमरत्व प्रदान करता है तो कोई अतिष्योकित न होगी। 'परिवार' षब्द के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये। जुकरमैन के अनुसार - एक परिवार, समूह, पुरूश स्वामी, उसकी स्त्री या स्त्रियों और उनके बच्चों से मिलकर समाज बनता है और कभी-कभी इसमें एक या अधिक अविवाहित पुरूश भी सम्मिलित रहते हैं।[३] वर्गीस तथा लॉक का कथन - एक परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रूधिर अथवा गोद लेने के सम्बन्धों में एक दूसरे से बंधे रहते है, जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं, एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया और अन्तः संचार करते रहते है जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं जो पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-स्त्री और भाई-बहन की निजी सामाजिक भूमिका में, एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और अन्तः संचार करते रहते हैं और जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा उसे बनाए रखते हैं।'' [४] आर्गबन तथा निमकॉफ ने बतलाया कि संतान सहित तथा संतान रहित पति-पत्नी की समिति को या संतान सहित स्त्री या संतान सहित पुरूश की थोड़ी बहुत समिति को परिवार कहते है। [५] अतः परिवार को सामान्य निवास आर्थिक सहयोग एवं प्रजनन के आधार पर समाज की अन्य संस्थाओं से अलग किया जा सकता है। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज का अस्तित्व बना रहता है। स्नेह, आदर, श्रद्धा, वात्सल्य, त्याग, प्रेम और संतान कामना आदि भावनाओं से परिवार बंधे रहता है। अपनी संस्कृति धार्मिक विष्वास, सामाजिक मूल्यों का पाठ बालक को परिवार से ही मिलता है।

इस समय समाज में जन-जीवन बहुत अस्त-व्यस्त था। अंग्रेजों की पराधीनता से भारतीयों को अपनी मौलिक भावनाओं के प्रकटीकरण का अवसर नहीं मिलता था अतैव लोगों में हीन भावना घर कर गई थी। लोगों में अतीव असंतोश व्याप्त था फलस्वरूप उनका जीवन भार स्वरूप हो गया था। वे अनेक कुरीतियों के षिकार थे जिससे अपनी उन्नति का प्रयत्न भी नहीं करते थे। इस उपन्यास की कट्टो नायिका है। उसका पहला स्वरूप बाल विधवा का है, जो सत्यधन की प्रेयसी है। बाद में वह बिहारी के साथ मात्र आत्मिक विवाह करके पत्नी बन जाती है, परंतु मूलतः वह प्रेयसीयत्व में ही जीती है। बिहारी के साथ पत्नीत्व धारण करने के बाद भी वह सत्यधन के प्रेयसीयत्व पद से विलग नहीं है। गरिमा इस उपन्यास में दूसरी नारी है, जो बिहारी की बहिन है। जो सत्यधन के प्रति प्रथम दृष्टि आकर्षण में बद्ध और अंततः पत्नीत्व में सफल है।

निष्कर्ष

समाज की इस हीनावस्था को सुधारने का उल्लेखनीय प्रयास राजा राममोहन राय ने किया। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों तथा जाति-पाति, छुआछूत, मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया और समाज सेवा पर जोर दिया। उन्होंने सती प्रथा तथा बाल विवाह को रोकने के लिए प्रयत्न भी किए। इसी समय समाज सुधार के लिए देषभर में प्रयत्न किए जा रहे थे, पर ''आर्य समाज'' के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रयास सर्वोपरि थे। स्वामी जी ने अवतारवाद, मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए जाति-पाति के बंधंनों, बाल-विवा, अषिक्षा, पर्दा प्रथा, अंधविष्वास, छुआछूत, समुद्र यात्रा निशेध आदि का विरोध किया और विधवा विवाह तथा स्त्री षिक्षा का प्रचार किया। जैनेंद्र कुमार ने विभिन्न राश्ट्रहित के सुधारों का प्रचार कर भारतीय समाज को एकसूत्र में पिरोने का प्रयत्न किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वही, पृ० १२६
2. साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ० ३४२
3. एस.जुकरनैन, द सोषल लाइफ आफ मन्कीज एण्ड, पृ.२२५
4. ई.डब्ल्यू.वर्गीस तथा एच.जे.लॉक, द फैमिली फ्राम इंस्टीट्यूषन आफ कम्पेनियषिन, पृ.८
5. डब्ल्यू,एफ. ऑर्गबर्न और एम.एफए निमकॉफ, ए हैण्ड बुक ऑफ सोषियोलॉजी, पृ.४५६